MANUSCRIPTS RESOURCE CENTRE

पाण्डुलिपि–संसाधन–केन्द्र

संस्कृत–विभाग

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

पाण्डुलिपि–संसाधन–केन्द्र, संस्कृत विभाग– विस्तारित भवन

1 पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र–परिचय

2 पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र–परामर्शदात्री समिति

3 पाण्डुलिपि सर्वे डाटा

4 पाण्डुलिपि ई–डाटा

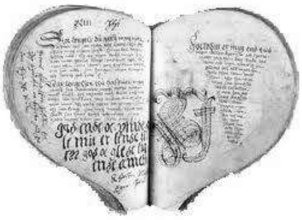

5 पाण्डुलिपि डिजिटिलाइजेशन

6 पाण्डुलिपि विवरणात्मक सूचीकरण

7 पाण्डुलिपि राष्ट्रीय संगोष्ठी

8 पाण्डुलिपि तत्त्वबोध व्याख्यान

9 पाण्डुलिपि जागरूकता कार्यक्रम एवं प्रदर्शनी

10 पाण्डुलिपि कार्यशाला

11 पाण्डुलिपि वार्षिकोत्सव

12 पाण्डुलिपि– आगामी कार्य योजनायें

➢ पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र परिचय

प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों (Manuscripts) को संरक्षित, संबर्धित करने तथा उनमें संकलित ज्ञान–राशि को जन–सामान्य तक पहुचाने के उद्देश्य से **भारत सरकार** के **संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय** द्वारा इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली की विशिष्ट परियोजना के रूप में **राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन** (National Mission for Manuscripts) की सन् 2002 में स्थापना की गई। मिशन द्वारा सम्पूर्ण भारत वर्ष में पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण, संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से विभिन्न विश्वविद्यालयों,महाविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा प्राचीन पाण्डुलिपि संग्राहलयों में पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र तथा पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्रों की स्थापना की गई। इसी क्रम में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म. प्र.) के संस्कृत–विभाग में दिनांक 1सितम्बर 2005 को राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन का एक केन्द्र पाण्डुलिपि–संसाधन–केन्द्र (Manuscript Resource Center) स्थापित किया गया। राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के निदेशक **श्रीमती सुधागोपालकृष्णन्** तथा डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) के **कुलपति प्रो. धीरेन्द्रपाल सिंह** के मध्य अनुबन्ध (MOU) हुआ। तत्कालीन संस्कृत विभाग अध्यक्ष **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी** (पूर्व कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली) के निर्देशन में **प्रो. अच्युतानन्द दाश** के समन्वयकत्व में केन्द्र की स्थापना हुई।

पाण्डुलिपि ग्रन्थालय

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र ने सर्वप्रथम दो सर्वेक्षकों की नियुक्ति के साथ नवम्बर 2005 में पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण का कार्य प्रारंभ किया था। तत्पश्चात् फरवरी 2007 में दस सर्वेक्षकों **(डॉ. शीतांशु त्रिपाठी, डॉ. संजय कुमार दुबे, श्री ब्रजेश रिछारिया, श्री सौरभ जैन, कु. सविता राय, कु. रश्मि जैन, कु. वर्षा जैन, कु. खुशबू जैन, श्री सुखदेव धांधोड़े, श्री विष्णु मीणा, ऋषभ भारद्वाज, ऋषन्। अंशकालीन परडाटा वेसिस डॉ. श्रीमती शैली त्रिपाठी, श्री प्रदीप दुबे, श्री राजकुमार दुबे, कु. दीक्षा दुबे ने कार्य किया।)** की नियुक्ति की गई। सर्वेक्षकों ने सागर, दमोह, छतरपुर, पन्ना, ग्वालियर, टीकमगढ़, सतना, भोपाल,

विदिशा, अशोकनगर, पन्ना, बैतूल दतिया (म.प्र.) तथा खैरागढ़, रायपुर, बिलासपुर (छ.ग.) में एवं नागपुर (महाराष्ट्र) में सर्वेक्षण कार्य किया। उन्होंने 87 संस्थाओं तथा 300 व्यक्तिगत संग्रहालयों में कार्य करके अपना सर्वेक्षण कार्य सम्पन्न किया। सर्वेक्षण में देवनागरी, उर्दू, बंगला, ग्रन्थ तथा उड़िया आदि लिपियों में निबद्ध पाण्डुलिपियों का डाटा शीट्स तैयार किये गये।

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र–परामर्शदात्री समिति :–

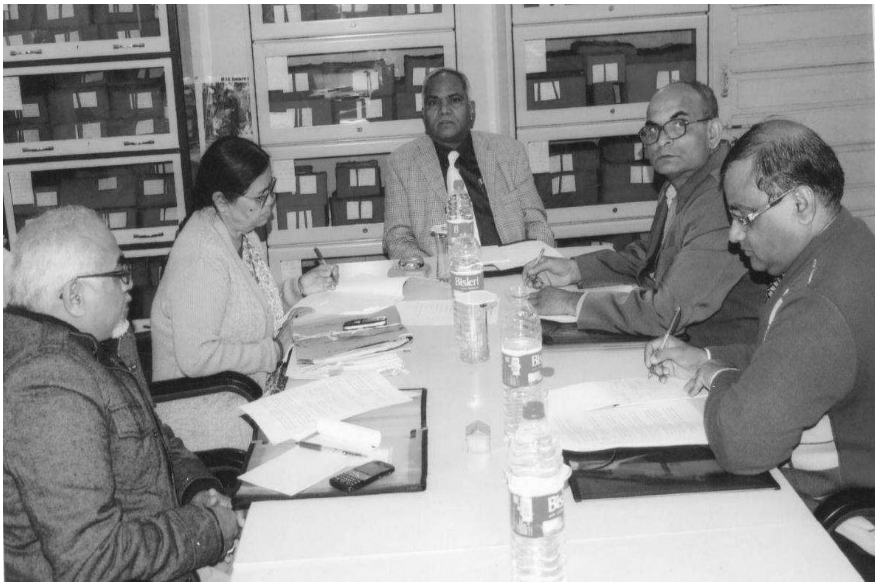

परामर्शदात्री समिति की बैठक में कुलपति प्रो. एन.एस. गजभिए,
कुलसचिव प्रो. एन.के. जैन, वित्ताधिकारी प्रो. जे.के. जैन,
अधिष्ठाता प्रो. वीरेन्द्र मोहन शुक्ल

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के विधानानुसार पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र, पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, पाण्डुलिपि संपादन केन्द्र या जो भी अन्य परियोजनायें है उन्हें सुव्यवस्थित संचालित करने के लिए स्थानीय प्रशासन की एक समिति गठित करना अत्यावश्यक होता है जिसे परामर्शदात्री समिति कहा जाता है। सन् 2005 में पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र की स्थापनोपरान्त केन्द्र समन्वयक प्रो. अच्युतानन्द दाश ने विश्वविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारियों की परामर्शदात्री समिति गठित की। तत्कालीन **कुलपति प्रो. धीरेन्द्रपाल सिंह** समिति के अध्यक्ष बने। कुलपति की अध्यक्षता में 08 सदस्यीय समिति का गठन हुआ जिसके सदस्य निम्नानुसार होते है। वर्तमान परामर्शदात्री समिति के पदाधिकारी–

1. अध्यक्ष	प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी	कुलपति
2. सदस्य	प्रो. निवेदिता मैत्रा	कुलसचिव
3. सदस्य	प्रो. जी.एल. पुलताँबेकर	वित्ताधिकारी
4. सदस्य	प्रो. एच. थामस	निर्देशक, शोध एवं विकास
5. सदस्य	श्री आर. के. पाल	सहा. कुलसचिव, शोध एवं विकास
6. सदस्य	प्रो. निवेदिता मैत्रा	अधिष्ठाता, भाषा अध्ययनशाला
7. सदस्य	प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	अध्यक्ष, संस्कृत–विभाग
8. सदस्य	प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	समन्वयक

परामर्शदात्री की बैठक में कुलपति प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी, कुलसचिव प्रो. निवेदिता मैत्रा, वित्ताधिकारी प्रो. जी.एल. पुंताम्बेकर, समन्वयक तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, सहायक समन्वयक डॉ. ऋषभ भारद्वाज

परामर्शदात्री समिति अध्यक्ष–

1. प्रो. धीरेन्द्र पाल सिंह, कुलपति (2005 से)
2. प्रो. एन. एस. गजभिये, कुलपति (2009 से)
3. प्रो. राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी, कुलपति (मार्च 2015 से ....)

- **समयन्वयक (Coordinator):-**

1. प्रो. अच्युतानन्द दाश (01 सितम्बर 2005 से जून 2009 तक)
2. प्रो. कुसुम भूरिया (नवम्बर 2009 से जून 2016 तक)
3. प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी (जनवरी 2017 से ....)

- **केन्द्र प्रभारी एवं सहायक समन्वयक**

डॉ. ऋषभ भारद्वाज

पाण्डुलिपि सर्वेक्षक 2006 से,

केन्द्र प्रभारी 2009 से

सहायक समन्वयक 2017 से

पाण्डुलिपि सर्वे डाटा

केन्द्र में नबम्बर 2005 से अभी तक 90,000 डाटा शीट्स बनाई जा चुकी है। इसमें से 85000 डाटा को ई–डाटा में परिवर्तित किया गया है। पाण्डुलिपि डाटा शीट्स की हार्ड कापी केन्द्र में उपलब्ध है। इसका इलेक्ट्रानिक शीट्स मिशन को प्रेषित की जाती है।

पाण्डुलिपि ई–डाटा

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन नई दिल्ली द्वारा उपलब्ध कराये गये **मनुस ग्रन्थाबली** साफ्टवेयर में 85000 पाण्डुलिपि सर्वे डाटा को ई–डाटा में परिवर्तित किया गया है। जिसका वेकप (Backup) प्रतिवर्ष मिशन को भेजा जाता है। केन्द्र में भी इसकी एक कॉपी उपलब्ध रहती है।

डिजिटिलाइजेशन

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र, सागर में 6000 पाण्डुलिपियॉ उपलब्ध है। मिशन द्वारा महत्त्वपूर्ण 1010 पाण्डुलियों को डिजिटिलाइज किया गया है जिसका वेकप 24 DVD में सुरक्षित है। डिजिटल पाण्डुलिपियों का डाटा मिशन और केन्द्र के पास उपलब्ध है। शेष 5 हजार पाण्डुलिपियों का डिजिटिलाइजेशन कराना प्रस्तावित है।

विवरणात्मक सूचीकरण

पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र सागर में 6000 पाण्डुलिपि संग्रहीत हैं। 5100 पाण्डुलिपियों का विवरणात्मक सूचीकरण तैयार किया गया है। विवरणात्मक सूचीकरण का प्रकाशन प्रस्तावित है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी–

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली की विशेष आर्थिक सहायता से मिशन द्वारा निर्धारित विषयों पर 02 राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गई।

नाट्यशास्त्र, दृश्यकाव्य और प्रयोग विज्ञान की पाण्डुलिपि परम्परा

विषय पर 18 से 20 नबम्बर 2006 स्वर्ण जयन्ती सभागार, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुलपति प्रो. डी.पी. सिंह, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन निदेशक श्रीमती सुधा गोपालकृष्णन्, प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी, प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता, प्रो. अच्युतानंद दाश

21 वीं शती राष्ट्रीय पाण्डुलिपि संपत्

विषय पर 26 से 27 दिसम्बर 2005 पुरातत्त्व विभाग सभागार, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

तत्त्वबोध व्याख्यान

मिशन द्वारा महत्वपूर्ण अप्रकाशित पाण्डुलिपियों पर शोध के विविध आयामों को विकसित करने एवं युवा पीढ़ी को पाण्डुलिपियों में शोध की ओर उन्मुख करने के लिए तत्त्वबोध व्याख्यान माला संचाालित होती है। इसी व्याख्यान माला में केन्द्र ने दो महत्वपूर्ण विषयों पर तत्त्वबोध व्याख्यान आयोजित किये।

- **सौन्दर्यबोध के परिप्रक्षेय में सौन्दर्य लहरी की चित्रित पाण्डुलिपियॉ**

  (10 अक्टूबर 2006)

  वाडिया सभागार, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

  मुख्य अतिथि–प्रो. राजेन्द्र नानावटी, बडौदरा (गुजरात)

  अध्यक्ष– प्रो. डी.पी. सिंह, कुलपति

  सारस्वत अतिथि– प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी

  समन्वयक–प्रो. अच्युतानन्द दाश

- **श्रीमद् भागवत महापुराण की पाण्डुलिपि परम्परा**–

  दिनांक–28 दिसम्बर 2010, मानस भवन दमोह (म.प्र.)

  मुख्य वक्ता–प्रो. गंगाधर पण्डा, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.)

  सारस्वत अतिथि–प्रो. श्याम सुन्दर दुबे, निदेशक, मुक्तिबोध सृजन पीठ, सागर (म.प्र.)

  समन्वयक–प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता, अध्यक्ष, संस्कृत–विभाग

तत्वबोध व्याख्यान में प्रो. गंगाधर पण्डा, कुलपति जगन्नाथ विश्वविद्यालय पुरी, उड़ीसा, प्रो. श्यामसुन्दर निगम, दमोह, प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता

पाण्डुलिपि जागरूकता कार्यक्रम–

मिशन की योजनानुसार पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र ने बुन्देलखण्ड और सम्पूर्ण मध्यभारत में पाण्डुलिपियों के प्रति लोगो मे जागरूकता लाने के उद्देश्य से निम्न स्थानों पर पाण्डुलिपि जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये गये। जागरूकता कार्यक्रमों से समूचे बुन्देलखण्ड में पाण्डुलिपियों के रखरखाव के प्रति रुझान बढ़ा। अपने –अपने ग्रन्थों को संरक्षित एवं सुरक्षित स्थान पर रखने की दृष्टि से हमारे केन्द्र को पाण्डुलिपियॉ दान स्वरूप प्राप्त हुई। पाण्डुलिपियों का प्राचीन एवं अर्वाचीन पद्धति से उपचार कर सुरक्षित रखा गया है। सागर, जबलपुर, चित्रकूट, रीवा, ग्वालियर, गाडरवारा, दतिया, भोपाल।

पाण्डुलिपि प्रदर्शनी

पाण्डुलिपि कार्यशाला

वर्तमान में लोग लिपियों का अध्ययन–अध्यापन लगभग छोड चुके है। पाण्डुलिपियों के क्षेत्र में मूलतः संस्कृतभाषा ही कार्य कर रहे है जिनकी संख्या नगण्य है। ऐसी स्थिति में ज्ञान की अक्षुण्य संपदा से निहित पाण्डुलिपियों का भविष्य क्या होगा? इस व्यापक राष्ट्रीय चिन्ता से उन्मुख होने के लिये राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने लिपियों के अध्ययन की योजना तैयार की। कार्यशाला के माध्यम से विद्वानों, शिक्षकों और शोधार्थियों को प्राचीन, ब्राह्मी, शारदा, नागरी, ग्रन्थ आदि महत्वपूर्ण लिपियों का अध्ययन कराया जाता है। जिससे भावी पीढ़ीयाँ पाण्डुलिपियों को पढ़कर उनका भविष्य सुरक्षित कर सकें। इसी दृष्टि से केन्द्र द्वारा दो कार्यशाला आयोजित की गई।

- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली की विशेष सहायता से पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र द्वारा **पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपिशास्त्र** विषय पर 21 दिवसीय कार्यशाला (7 से 26 अप्रैल 2008) आयोजित हुई थी।कार्यशाला में हारदा,ब्राही, प्राचीन नागरी लिपियां का अध्ययन कराया गया था जिसमें लगभग 50 शोधार्थी एवं शिक्षक प्रशिक्षित हुये थे।

- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली की विशेष सहायता से पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र सागर द्वारा **पाण्डुलिपि विज्ञान तथा पुरालिपिशास्त्र** 15 दिवसीय पाण्डुलिपि विषय संगोष्ठी का आयोजित किया गया था। कार्यशाला में 60 शिक्षक तथा शोधार्थी को प्रशिक्षित किया गया। दोनों कार्यशालाओं में प्रशिक्षित शोधार्थी पाण्डुलिपियों के क्षेत्र उनके संरक्षण एवं संवर्धन में अच्छा कार्य कर रहे है।

पाण्डुलिपि वार्षिकोत्सव

दिनांक 31 जुलाई 2010 को मिशन की आर्थिक सहायता से, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र द्वारा, वाडिया सभागार,डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र. में वार्षिकोत्सव समारोह मनाया गया। अध्यक्षता कुलपति प्रो. एन.एस. गजभिये, मुख्य अतिथि–प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी कुलपति राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली सारस्वत अतिथि, प्रो. कृष्णाकान्त चतुर्वेदी, विशिष्ट अतिथि श्री विजय शंकर शुक्ला तथा समन्वयक कुसुम भूरिया दत्ता थी।

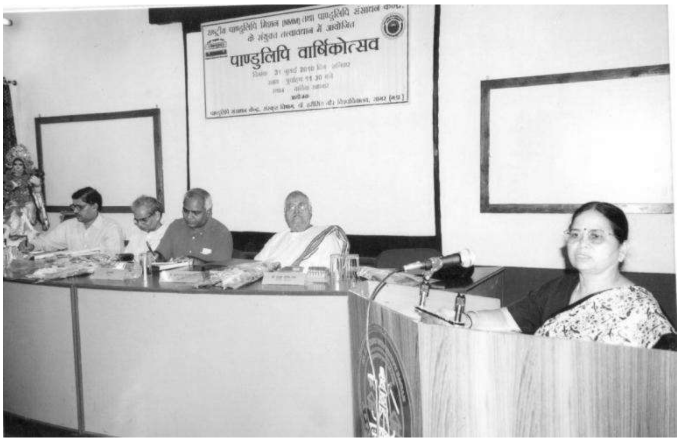

आगामी कार्ययोजनायें

1. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र (MCC) की स्थापना
2. पाण्डुलिपि संपादन केन्द्र (MEC) की स्थापना
3. विवरणात्मक सूचीकरण (Deseriptive) प्रकाशन
4. डिजिटिलाइजेशन शेष 4000 पाण्डुलिपियों का

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष एवं समन्वयक
पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र, संस्कृत विभाग
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

डॉ. ऋषभ भारद्वाज
प्रभारी एवं सहायक समन्वयक
पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र, संस्कृत विभाग
डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)